विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – पंचम् **दिनांक -20- 10-2020**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ 14 गुलीवर पहुंचे लिलिपुटियन के देश में नामक शीर्षक के बारे में अध्ययन करेंगे ।

स्वभाव से बहुत खुश थे। अब वे निडर होकर मेरे पास आते। कभी वे सिर पर

उछलते-कूदते और कभी नाचने लगते। बच्चे तो मेरे बालों में आँख-मिचौली खेलते। इस

तरह मैं उन सबके लिए खिलौना बन गया था।

एक दिन मैंने बादशाह से प्रार्थना की कि वे मुझे छोड़ दें। बादशाह ने मेरी प्रार्थना इस

शर्त पर स्वीकार की, कि मैं बादशाह की आज्ञा के बिना कहीं न जाऊँ और किसी देश में

युद्ध छिड़ जाने पर लिलिपुटवासियों की मदद करूँ।

कुछ दिनों बाद मुझे खबर मिली कि पड़ोसी देश ब्लेफुस्कु के बादशाह ने एक

शक्तिशाली जहाजी बेड़ा बना लिया है और लिलिपुट पर चढ़ाई करने का अवसर देख

रहा है। शर्त के अनुसार मैंने उन लोगों की सहायता करने की योजना बनाई।

मैं

कुछ रस्सियाँ और काँटे लेकर ब्लेफुस्कु की खाड़ी की ओर चल दिया। यह खाड़ी उन

लोगों के लिए एक महासागर के समान थी, लेकिन मेरे लिए कोई विशेष गहरी न थी। खाड़ी में घुसकर मैंने वहाँ खड़े सभी जहाजों को

काँटे में फँसा लिया और उन्हें खींचता-खीचता लिलिपुट की ओर चल दिया। उनके सैनिकों ने मेरे ऊपर तीरों की बौछार शुरू कर दी,

लेकिन उनका मेरे ऊपर कोई असर न हुआ, क्योंकि मैंने चमड़े का कोट पहन रखा था और चश्मा लगा रखा था।

ब्लेफुस्कु के जहाजों को जब मैं लिलिपुट की खाड़ी में ले गया, तो वहाँ के बादशाह ने मुझे अपने देश की सबसे बड़ी उपाधि

से सम्मानित किया।

एक दिन मैं खाड़ी के किनारे घूम रहा था कि मैं पानी में एक बड़ा तख्ता तैरता हुआ देखा। ध्यान से देखने पर पता चला कि

एक उल्टी हुई नाव थी। उसे देखकर मैं खुशी से नाच उठा। यह नाव मेरी आशाओं की ज्योति थी।

कुछ दिनों बाद मैंने बादशाह से अपने देश लौटने की आज्ञा माँगी। उन्होंने बड़े प्रेम से मुझे विदा किया और बहुत सी भोजन

सामग्री मेरी नाव में रखवा दी। सौभाग्य से मार्ग में मुझे मेरे देश का जहाज मिल गया और मैं अपने देश वापस लौट आया।

आज भी मैं अपनी उस विचित्र यात्रा को भूल नहीं पाता हूँ।

ध्यान पूर्वक पढ़े।